

# डॉ. रॉबर्ट सी. न्यूमैन, सिनॉटिक गॉस्पेल, व्याख्यान 15 संपादन आलोचना

© 2024 रॉबर्ट न्यूमैन और टेड हिल्डेब्रांट

ठीक है, अब हम रेडक्शन आलोचना की ओर मुड़ते हैं। रेडक्शन आलोचना क्या है? खैर, हमें कुछ परिभाषाएँ देखने की ज़रूरत है। रेडक्शन, यानी एक संपादक की गतिविधि।

इससे यह सवाल उठता है कि संपादक क्या है। खैर, हम कह सकते हैं कि यह एक ऐसा व्यक्ति है जो संपादन करता है, लेकिन हम संपादक का पर्यायवाची कहेंगे, ठीक है? और फिर संपादन आलोचना एक प्रकार का बाइबिल अध्ययन है जो संपादकों या संपादकों की गतिविधि से संबंधित है। नॉर्मन पेरिन ने अपनी छोटी पुस्तिका, संपादन आलोचना क्या है? में पृष्ठ एक पर कहा है, यह एक लेखक की धार्मिक प्रेरणा का अध्ययन करने से संबंधित है क्योंकि यह पारंपरिक सामग्री के संग्रह, व्यवस्था, संपादन और संशोधन और नई सामग्री की रचना या प्रारंभिक ईसाई धर्म की परंपराओं के भीतर नए रूपों के निर्माण में प्रकट होता है। मैं आपको संपादन आलोचना के इतिहास का एक बहुत ही संक्षिप्त विवरण देने जा रहा हूँ।

यह उदारवादी न्यू टेस्टामेंट आलोचना में एक अपेक्षाकृत हालिया विकास है जिसके लिए हम एक त्वरित समीक्षा देते हैं। हमने पहले समकालिक समस्याओं और स्रोत आलोचना के बारे में बात की थी। दूसरी शताब्दी से, सुसमाचारों के बीच समानताओं और मतभेदों और उन्हें कैसे समझाया जाए, इस बारे में बहस और चर्चा होती रही है।

19वीं सदी के अंत तक, दो-दस्तावेज़ सिद्धांत नामक एक तरह की आम सहमति बन गई थी, क्यू और मार्क मैथ्यू और ल्यूक के स्रोत थे। इस तरह के काम को साहित्यिक या स्रोत आलोचना कहा जाता है। गॉस्पेल की ऐतिहासिक विश्वसनीयता, जिस पर सिनॉटिक समस्या के समानांतर चर्चा की गई थी, 19वीं सदी में धार्मिक उदारवाद के उदय के साथ विशेष रूप से तीखी बहस हुई।

उस सदी के अंत तक, लगभग 1900 तक, अधिकांश उदारवादियों को लगा कि मार्क सबसे विश्वसनीय सुसमाचार था, सिवाय इसके चमत्कारों के, जो मूल रूप से ऐतिहासिक थे। विल्हेम ब्रेडे ने अपने मेसियानिक सीक्रेट 1901 में तर्क दिया कि मार्क विश्वसनीय इतिहास नहीं था, बल्कि यीशु को मसीहा के रूप में प्रस्तुत करने के लिए धर्मशास्त्रीय रूप से प्रेरित था, हालाँकि यीशु ने कभी ऐसा होने का दावा नहीं किया। फिर, जर्मनी में द्वितीय विश्व युद्ध के ठीक बाद न्यू टेस्टामेंट के अध्ययन में आलोचना हुई।

इसके अग्रदूत कार्ल शिम्ट, मार्टिन डेबेलियस और खास तौर पर रुडोल्फ बुल्टमैन थे। उन्होंने ब्रेडे के इस दावे को स्वीकार किया कि मार्क ने अपना खुद का ढांचा बनाया था, और उन्होंने मौखिक प्रसारण की अवधि का अध्ययन करने के लिए सुसमाचार के पीछे जाने की कोशिश की। अधिकांश रूप आलोचकों ने दावा किया कि यीशु के जीवन और सुसमाचार के लेखन के बीच, बहुत सारी सामग्री का आविष्कार किया गया था, और बहुत कुछ बदल गया था।

खैर, यह हमें संपादन आलोचना की ओर ले जाता है। संपादन आलोचना, रूप आलोचना और स्रोत आलोचना द्वारा अनदेखा किए गए क्षेत्रों को भरकर सुसमाचारों के आलोचनात्मक विश्लेषण को पूर्ण करने का प्रयास करती है। यह सुसमाचार संपादकों के काम का अध्ययन करती है, विशेष रूप से उनके धार्मिक प्रेरणा का, मौखिक सामग्रियों को संकलित करके लिखित विवरण बनाने या लिखित सामग्रियों को संयोजित करने और संपादित करके उनके सुसमाचार बनाने में।

तो, यहाँ परंपरा के बारे में आलोचना का एक रूप है। स्रोत आलोचना यहाँ मार्क और क्यू और मैथ्यू और ल्यूक के साथ उनके संबंधों के बारे में है, और संपादन आलोचना यह देख रही है कि परंपराओं को चुनने और उन्हें संशोधित करने में मार्क क्या करता है, परंपराओं को चुनने और उन्हें संशोधित करने में क्यू क्या करता है, और विशेष रूप से मार्क और क्यू से सामग्री का चयन करने में मैथ्यू और ल्यूक क्या करते हैं। संपादन आलोचना का पूर्वाभास ब्रेडे और बुल्टमैन के काम में हुआ था, लेकिन विशेष रूप से आरएच लाइटफुट के बैटन व्याख्यान 1934 में। आरएच लाइटफुट को 19वीं सदी के जेबी लाइटफुट से अलग किया जाना चाहिए।

वह बहुत ज़्यादा रूढ़िवादी व्यक्ति थे। हालाँकि, संपादन आलोचना का असली उत्कर्ष द्वितीय विश्व युद्ध के ठीक बाद जर्मनी से आया। प्रथम विश्व युद्ध के ठीक बाद जर्मनी से रूप आलोचना निकली। द्वितीय विश्व युद्ध के ठीक बाद जर्मनी से संपादन आलोचना निकली।

यहाँ शामिल कार्य हैं गुंथर बोर्नकैम और 1948 और उसके बाद मैथ्यू पर उनके कार्य, 1954 में ल्यूक पर उनके कार्य में हंस कोन्ज़ेलमैन, और 1956 में मार्क पर उनके कार्य में विली मार्कसन। हाल ही में, क्यू और जॉन के अध्ययन में संशोधन और आलोचना फैल गई है। रॉबर्ट गुंड्री का कार्य, मैथ्यू, लॉस लिटेरी और थियोलॉजिकल आर्ट पर एक टिप्पणी, 1982, इंजील सर्किलों में विधि के प्रसार का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके लिए गुंड्री को वास्तव में इवेंजेलिकल थियोलॉजिकल सोसाइटी से बाहर कर दिया गया था।

गुंड्री को लगता है कि मैथ्यू ने अपने सुसमाचार में कुछ घटनाओं का आविष्कार धार्मिक बिंदुओं को बनाने के लिए किया था, जैसे कि मैगी का आना और बच्चों की हत्या। गुंड्री यहां सबसे कट्टरपंथी इंजीलवादी हो सकते हैं, लेकिन वे निश्चित रूप से अकेले नहीं हैं। खैर, आइए हम संपादन आलोचना की कार्यप्रणाली के बारे में थोड़ा सोचें।

संपादन आलोचना कैसे काम करती है? निम्नलिखित चरण इसमें शामिल प्रक्रियाओं का एक स्केच देते हैं। संपादन आलोचना का संबंध आमतौर पर एक समय में एक संपादक के संपादन कार्य की जांच करने से है। इसलिए, आप किसी दिए गए सुसमाचार और उसके समानांतरों के बीच सभी अंतरों की सावधानीपूर्वक तुलना करते हैं।

तो, उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि आप मैथ्यू के संपादन कार्य को देखने जा रहे हैं, मान लीजिए, जिसका मतलब है कि आप मैथ्यू के सुसमाचार के लेखक से मतलब रखते हैं, जिसे गुंड्री ने, मुझे लगता है, मैथ्यू ही माना था। इसे जाँचें। अब इसे याद रखें।

तो, आप मैथ्यू की तुलना मार्क और ल्यूक से करेंगे और ध्यान दें कि उनके प्रत्येक विवरण में कहाँ अंतर है। दूसरा, उन अंतरों को खोजने का प्रयास करें जो अध्ययन के तहत लेखक की संपादकीय गतिविधि का परिणाम हैं। इनमें से कौन सी चीजें मैथ्यू ने कीं? तो, जब आप मार्क के विवरण की तुलना मैथ्यू के विवरण से कर रहे हैं, तो क्या मैथ्यू ने ऐसा किया है या नहीं? इस तरह की बातें।

आम तौर पर, आपको सुसमाचारों के कुछ विशेष क्रम और संबंध को मानना होगा। और लगभग हमेशा, यह दो-दस्तावेज़ सिद्धांत है, जो सुसमाचार में वास्तविक शोधकर्ताओं के बीच, उस तरह के प्रश्नों में, निश्चित रूप से बहुमत का दृष्टिकोण है, लेकिन यह एक विशाल बहुमत का दृष्टिकोण नहीं है। लेकिन जब आप संपादन आलोचना में उतरते हैं, तो वह विशाल बहुमत है जो उस विशेष मॉडल के साथ जाता है।

वह दो-दस्तावेज़ मॉडल यह मानता है कि मैथ्यू ने मार्क और क्यू का इस्तेमाल किया। दूसरा, आप मानते हैं कि लेखक के पास कोई अन्य स्रोत नहीं है या कम से कम उसके अपने योगदान को शैली द्वारा पहचाना जा सकता है। फिर, आप शैली पर सांख्यिकी की तुलना करके उन क्षेत्रों में लेखक के योगदान को पहचानते हैं जहाँ यह अन्यथा अनिश्चित होता। तो आपने अंतरों को देखा है, और अब आप यह भेद करने की कोशिश कर रहे हैं कि कौन से हैं, मान लीजिए, हमारे विशेष उदाहरण में, हम मैथ्यू के काम के बारे में सोच रहे हैं, आदि।

तीसरा, आप इन मतभेदों को प्रस्तुत करने के लिए लेखक की धार्मिक प्रेरणा निर्धारित करने के लिए इन विस्तृत मतभेदों का अध्ययन करते हैं। एक बार जब आप समझ जाते हैं कि वे क्या हैं, तो आप उन ग्रंथों का पता लगाते हैं जो इन प्रेरणाओं को व्यक्त करते हैं, और फिर आप इन ग्रंथों और प्रेरणाओं के संदर्भ में पूरे सुसमाचार की व्याख्या करते हैं। चौथा, आप लेखक के दृष्टिकोण, उसकी परिस्थितियों, उसके समूह और उसके श्रोताओं का पुनर्निर्माण करते हैं।

जर्मन लोग इसे ही सिट्ज़ अंड लेबेन कहते हैं, यानी लेखक की जीवन स्थिति, आदि। मार्कसन, मार्क में संपादन आलोचना के साथ काम करते हुए, एक दिए गए सुसमाचार मार्ग में तीन सिट्ज़ अंड लेबेन, या तीन जीवन स्थितियों को देखने में विशिष्ट हैं। सबसे पहले, यीशु की सेवकाई है।

मार्कसन और ये अन्य लोग स्वीकार करेंगे कि यीशु अस्तित्व में थे और उन्होंने वास्तव में कुछ कार्य किए। ठीक है, तो कुछ सिट्ज़ अंड लेबेन, एक सिट्ज़ इम लेबेन यीशु का मंत्रालय है। लेकिन फिर स्रोतों की पृष्ठभूमि है, और वे मार्क और क्यू, या प्रोटो मार्क, या उस तरह की विभिन्न प्रकार की चीजें होंगी।

उनका सिट्ज़ अंड लेबेन क्या है? और फिर आपको संपादक, सुसमाचार लेखक की पृष्ठभूमि, उस व्यक्ति का सिट्ज़ अंड लेबेन मिल गया। तो, मार्कसन के लिए, वह मार्क होगा। गुंड्री के लिए, वह मैथ्यू होगा, आदि।

खैर, हम इस पर विस्तार से चर्चा नहीं करेंगे। यह पाठ्यक्रम के अंत में एक संक्षिप्त प्रस्तुति मात्र है, लेकिन संपादन आलोचना के कुछ परिणाम हैं। उदारवादी हलकों में, हम यीशु के जीवन के

बारे में बहुत कम जानते हैं, लेकिन हम प्रारंभिक ईसाई धर्म में बहुत से विविध धार्मिक समूहों का पुनर्निर्माण कर सकते हैं।

रूढ़िवादी हलकों में, इवेंजेलिकल्स के बीच संपादन आलोचना बहुत अधिक संयमित है, लेकिन गुंड्री और अन्य लोगों के काम के साथ, यह इस विचार को पेश करना शुरू कर रहा है कि सभी कथाएँ उन घटनाओं का वर्णन नहीं करती हैं जो वास्तव में घटित हुई थीं। गुंड्री के लिए, मैथ्यू एक तरह का मिडराश बन जाता है, जो रब्बी साहित्य से उत्पन्न एक शब्द है, जो विभिन्न धार्मिक बिंदुओं को बनाने के लिए घटनाओं का एक कल्पनाशील पुनर्कथन या आविष्कार है। खैर, संपादन आलोचना का मूल्यांकन।

मैं कुछ अनुकूल टिप्पणियों के साथ शुरू करता हूँ, क्योंकि हम आगे कुछ गंभीर समस्याओं के बारे में बात करने जा रहे हैं। सबसे पहले, अनुकूल, सुसमाचार लेखकों ने यीशु के बारे में घटनाओं और सामग्रियों का चयन किया, जिसे उन्होंने रिकॉर्ड करने के लिए चुना। संभवतः, उन्होंने इस सामग्री को संक्षिप्त भी किया।

तो, यूहन्ना 20 और 31 और यूहन्ना 21:25 हमें बताते हैं, आप जानते हैं, वहाँ बहुत सारी सामग्री है, और मैंने इसे मसीहा के यीशु को देखने में आपकी मदद करने के लिए चुना है और ताकि आप उसके नाम में जीवन पा सकें। और लूका 1-1 एक खाता संकलित करने का संदर्भ देता है। दूसरे, सुसमाचार का कोई भी विस्तृत अध्ययन कुछ मूल्यवान अंतर्दृष्टि उत्पन्न करने के लिए बाध्य है। दृष्टिकोण सुसमाचारों का बहुत विस्तार से अध्ययन करता है।

तीसरा, सुसमाचार लेखकों ने स्पष्ट रूप से उनके चयन और प्रस्तुति में यीशु की सेवकाई की विभिन्न विशेषताओं पर जोर दिया, जैसा कि हम उनके सुसमाचारों की तुलना करके देख सकते हैं। मैथ्यू ने यीशु को राजा मसीहा के रूप में महत्व दिया, जो एक राज्य स्थापित करने, स्वर्ग का राज्य स्थापित करने के लिए पुराने नियम की भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए आ रहा है, और यीशु और इस्राएल के बीच इन समानताओं को बनाता है, और हमारे लिए यीशु के इन महत्वपूर्ण प्रवचनों को सुरक्षित रखता है।

मार्क ने यीशु के कार्यों और संक्षिप्त शब्दों पर जोर देते हुए इस प्रश्न का उत्तर दिया कि यह व्यक्ति कौन है? वास्तव में, यह प्रश्न मार्क के सुसमाचार के पहले भाग में कई अलग-अलग लोगों द्वारा पूछा गया है। और उसका उत्तर है, वह मसीहा है, वह परमेश्वर का पुत्र है। लूका ने ऐतिहासिकता पर जोर दिया है, जैसा कि आप उसके प्रस्तावना में देख सकते हैं, और यीशु के प्रत्यक्षदर्शी साक्ष्य पर, गैर-यहूदियों और महिलाओं और गरीबों में सामाजिक संबंधों में रुचि पर, और ये उदाहरणात्मक दृष्टांत हैं।

यूहन्ना यीशु के महत्व पर जोर देता है, व्यक्तिगत और लौकिक दोनों तरह से, और उसके व्यक्तित्व पर, जैसा कि उसके शब्दों और चमत्कारों में प्रकट होता है। यूहन्ना में अधिक प्रतीकात्मकता और अधिक रूपक समानता है, लेकिन फिर भी वही यीशु है। ये जोर हमें लेखकों की धार्मिक चिंताओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

तो वे अनुकूल टिप्पणियाँ। उन्होंने सामग्री का चयन किया, और कोई भी विस्तृत अध्ययन कुछ मूल्यवान अंतर्दृष्टि उत्पन्न करेगा। सुसमाचार लेखकों ने स्पष्ट रूप से यीशु की सेवकाई आदि की विभिन्न विशेषताओं पर जोर दिया, और ये जोर हमें सुसमाचार लेखकों की धार्मिक चिंताओं - कुछ गंभीर समस्याओं - के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

खैर, फॉर्म आलोचकों को जो नतीजे मिलते हैं, यहाँ तक कि गुंड्री जैसे इंजील फॉर्म आलोचकों को भी, वे चिंताजनक हैं। सबसे पहले, हमें दर्ज ऐतिहासिक विवरणों को खारिज़ किया जाता है। फ्रेडा ने कहा कि यीशु ने कभी भी मसीहा होने का दावा नहीं किया।

पेरिन, जो अधिक सख्ती से एक संपादन आलोचक हैं, कहते हैं, एक बार जब हम यीशु के बारे में बहुत कम जानते हैं, तो उनका कथन कुछ इस तरह दिखता है, कि संपादन आलोचना यीशु के शोध को बहुत अधिक कठिन बना देती है, यह निश्चित रूप से तुरंत स्पष्ट है, इस मान्यता के साथ कि सुसमाचार में इतनी सारी सामग्री को प्रचारक, या परंपरा के संपादक, या प्रारंभिक चर्च में एक नबी या उपदेशक के धार्मिक प्रेरणा के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए, हमें यह पहचानना होगा कि आरएच लाइटफुट के शब्द पूरी तरह से और बिल्कुल उचित थे। सुसमाचार हमें वास्तव में यीशु की आवाज की केवल एक फुसफुसाहट देते हैं। इसका मतलब है, व्यवहार में, हमें अपने शुरुआती बिंदु के रूप में यह धारणा लेनी चाहिए कि सुसमाचार हमें प्रारंभिक चर्च के धर्मशास्त्र के बारे में सीधी जानकारी प्रदान करते हैं न कि ऐतिहासिक यीशु की शिक्षा के बारे में।

यह सब रेडक्शन क्रिटिसिज्म क्या है के पेज 69 पर है। और फिर, बस कुछ ही पेज आगे, निष्कर्ष: उस पर विश्वास आधारित न करें। रेडक्शन क्रिटिसिज्म के प्रभाव की असली धार यह तथ्य है कि यह वास्तव में बहुत गंभीर सवाल उठाता है, कि आम तौर पर यीशु के जीवन के शोध, यीशु के जीवन के धर्मशास्त्र को क्या प्रेरित करता है।

यह सबसे ऊपर यह सवाल उठाता है कि क्या ऐतिहासिक यीशु को रहस्योद्घाटन का केंद्र और ईसाई धर्म की केंद्रीय चिंता के रूप में देखना वास्तव में न्यायोचित है। पृष्ठ 72. यह नॉर्मन पेरिन है, जो एक बहुत ही मुख्यधारा का उदारवादी होगा।

गुंड्री, रॉबर्ट गुंड्री, कुछ हद तक कट्टरपंथी इंजीलवादी हैं। बुद्धिमान लोगों की यात्रा और मिस्र की ओर पलायन कभी नहीं हुआ - उनकी टिप्पणी के पृष्ठ 26, 32, 34, 35।

मैं इन्हें पढ़ूंगा। मैथ्यू अब स्थानीय यहूदी चरवाहों की यात्रा, ल्यूक 2, 8 से 20, को विदेशी भागों से गैर-यहूदी जादूगरों द्वारा की गई आराधना में बदल देता है। जिस तरह वंशावली में मरियम के अलावा चार महिलाओं ने गैर-यहूदियों को चर्च में लाने की ओर इशारा किया, उसी तरह जादूगरों का आना सभी देशों के शिष्यों के प्रवेश का पूर्वावलोकन करता है जो उन लोगों के घेरे में हैं जो यीशु को यहूदियों के राजा के रूप में स्वीकार करते हैं और उन्हें भगवान के रूप में पूजते हैं।

यह सब पृष्ठ 26 पर है। फिर, जब वह अध्याय 2, पद 13 में उत्पीड़न से भागने के मूल भाव को आगे बढ़ाने के लिए आता है, तो मत्ती पवित्र परिवार द्वारा यरूशलेम की ओर जाने को, लूका 2,

22, मिस्र की ओर भागने में बदल देता है, पृष्ठ 32, और फिर पृष्ठ 34 और 35 पर चला जाता है। 2, 16.

मत्ती मूसा के जन्म के समय फिरौन द्वारा इस्राएलियों के नर शिशुओं की हत्या के अनुरूप एक प्रकरण के साथ मोज़ेक टाइपोलॉजी को आगे बढ़ाता है। ऐसा करने के लिए, वह एक जोड़े कबूतर या दो युवा कबूतरों की बलि को बदल देता है, जो एक मंदिर में शिशु यीशु की प्रस्तुति के समय हुआ था, लूका 2:24। लेवितिकस 12, 6 से 8 की तुलना हेरोदेस द्वारा यरूशलेम और बेथलहम में शिशुओं की हत्या से करें।

बच्चे की माताओं का दुःख उस तलवार से मेल खाता है जो मंदिर में प्रस्तुति के समय शिमोन की भविष्यवाणी के अनुसार मरियम के हृदय को छेदने वाली थी, लूका 1:35। मत्ती 2:18 से तुलना करें। हेरोदेस के बड़े अपराधों ने मत्ती के लिए इस तरह से डोमिनिकल परंपरा में हेरफेर करना आसान बना दिया, पृष्ठ 34, 35।

तो यह दर्ज ऐतिहासिक विवरण को अस्वीकार करना है। दूसरी चिंताजनक बात जो हम देखते हैं वह है काल्पनिक ऐतिहासिक विवरणों का निर्माण। मार्क की सेटिंग पर विले मार्कसन का वर्णन पेरिन ने पेज 38 और 39 पर किया है।

इस प्रकार संपादन आलोचना को उसकी सबसे दूर की सीमा तक ले जाने में, मार्कसन शायद काम में अभी भी भविष्य के दिन की ओर इशारा करते हैं। यह नया प्रस्थान उनकी अवधारणा है कि मार्कन धर्मशास्त्र वर्ष 66 ईस्वी में गैलिली में स्थिति को दर्शाता है, रोम के खिलाफ यहूदी युद्ध की शुरुआत में। मार्कसन का मानना है कि युद्ध की शुरुआत में यरूशलेम का ईसाई समुदाय यरूशलेम से गैलिली भाग गया था, कि वे वहाँ पारूसियास की प्रतीक्षा कर रहे थे, जिसे वे आसन्न मानते थे।

मार्क के सुसमाचार का दावा है कि मार्कसन अपने धर्मशास्त्र में इस स्थिति को दर्शाता है। इसलिए उदाहरण के लिए, 16 ई. में सुसमाचार का वर्तमान अंत ही सच्चा अंत है। मार्क का इरादा गलील में पुनरुत्थान के दर्शन की रिपोर्ट करने का नहीं था।

14:25 और 16:7 में गलील के संदर्भ पुनरुत्थान के संदर्भ नहीं हैं, बल्कि पारूसिया के संदर्भ हैं। मार्क को उम्मीद है कि यह घटना उसके अपने दिन में तुरंत घटित होगी। यहाँ हमारा उद्देश्य मार्कसन के सुसमाचार की रचना के स्थान और समय के संबंध में उनकी अंतर्दृष्टि की शुद्धता का बचाव करना या उनसे बहस करना नहीं है।

हमारी चिंता यह इंगित करना है कि यहाँ हम संपादन आलोचना से आगे बढ़कर एक और भी नए चरण की ओर बढ़ रहे हैं, एक ऐसा चरण जिसमें हम एक धार्मिक अंतर्दृष्टि से काम करते हैं, हम उस ऐतिहासिक स्थिति को निर्धारित करने में सक्षम हैं जिसमें वह अंतर्दृष्टि उत्पन्न हुई थी। काल्पनिक ऐतिहासिक विवरणों का निर्माण। मैथ्यू के सुसमाचार की पृष्ठभूमि पर गुंड्री के पृष्ठ पाँच और छह छंद।

मैथ्यू के जोर को ध्यान में रखते हुए, हम उस स्थिति का अनुमान लगा सकते हैं जिसमें उन्होंने लिखा था और जिन उद्देश्यों के लिए उन्होंने लिखा था। यह उनके सुसमाचार की धर्मशास्त्रीय विशेषता को भी प्रकट करेगा। मैथ्यू मिश्रित चर्च की समस्या पर बहुत चिंता व्यक्त करता है।

सभी देशों से धर्मातरित लोगों के आने से चर्च बड़ा हो गया है, मत्ती 28:18 से 20, लेकिन इन धर्मातरित लोगों में झूठे और सच्चे शिष्य दोनों शामिल हैं, और वह कई अंशों को उद्धृत करता है और वहाँ विभिन्न अध्यायों में कई अंशों का हवाला देता है। चर्च के उत्पीड़न के माध्यम से उनके बीच का अंतर प्रकाश में आ रहा है। मत्ती 5:10 से 12।

यह उत्पीड़न रोमन सरकार की ओर से नहीं शुरू हुआ था, बल्कि मुख्य रूप से यरूशलेम में यहूदी नेताओं के बीच फैला था। मत्ती लगातार उनके अपराध को उजागर करता है और बढ़ाता है—अध्याय 27:28 में दो उद्धरण।

सच्चे शिष्य धीरज के साथ कष्ट सह रहे हैं। उनमें से कुछ को अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा। दूसरी ओर, झूठे शिष्य उत्पीड़न से बचने के लिए यीशु को सार्वजनिक रूप से अस्वीकार कर रहे हैं।

उनके मुखिया, झूठे शिष्यों के पास झूठे भविष्यद्वक्ता हैं जो स्थापित पादरी प्रतीत होते हैं, यानी, चर्च के अधिकारी जिनके सहज व्यवहार और समायोजन की नीतियों ने उन्हें घुमंतू मंत्रालय की कठिनाइयों से बचाया है। ये झूठे भविष्यद्वक्ता फरीसी संप्रदाय और लिपिक व्यवसायों से चर्च में आए प्रतीत होते हैं। खैर, मैथ्यू की पृष्ठभूमि के बारे में सारी जानकारी देखें।

उसे यह कहाँ से मिला ? यह मानकर कि यीशु के मुँह से निकली विभिन्न टिप्पणियाँ इन बातों का संकेत हैं। और तीसरी चिंताजनक विशेषता पवित्रशास्त्र में ऐतिहासिक कथा-साहित्य की शैली का जुड़ना है। पेरिन कहते हैं, पृष्ठ 75 पर, कि सुसमाचार चिह्न वह प्रारूप है जिसका अन्य लोग अनुसरण करते हैं और यह ऐतिहासिक स्मृति, व्याख्या की गई परंपरा और भविष्यद्वक्ताओं और प्रचारकों की स्वतंत्र रचनात्मकता का मिश्रण है।

दूसरे शब्दों में, यह इतिहास, किंवदंती और मिथक का एक अजीब मिश्रण है। यह वह तथ्य है जिसे संपादन आलोचना स्पष्ट रूप से स्पष्ट करती है। गुंड्री।

गुंड्री इसे मिद्राश या हग्गदाह कहते हैं, लेकिन इसकी तुलना आधुनिक ऐतिहासिक उपन्यासों से करते हैं, जिनमें सत्य और कल्पना का मिश्रण होता है। उनकी टिप्पणी में पृष्ठ 630-632। खैर, ये कुछ खतरनाक घटनाओं के उदाहरण हैं जो घटित हो रही हैं।

लेकिन उनके पीछे कुछ तरीके संदिग्ध हैं। हम इन्हें विभिन्न शीर्षकों के अंतर्गत वर्गीकृत करते हैं, जिन्हें हम भ्रांतियाँ कहेंगे। वे सामान्य तार्किक अर्थों में भ्रांतियाँ नहीं हैं।

शब्दावली मेरी अपनी है, लेकिन पद्धतिगत समस्याओं को कई अन्य लोगों ने भी नोट किया है, जिनमें से पेशेवर साहित्यिक आलोचक मैकियास लुईस एक प्रमुख उदाहरण हैं, और मैं कई अवसरों पर उनसे उद्धरण दूंगा। मैं पद्धतिगत संशोधन आलोचना में पहली भ्रांति को रेत आधार

भ्रांति कहता हूँ। संशोधन आलोचना संदिग्ध मान्यताओं पर एक विस्तृत पद्धति का निर्माण करती है, जिसकी सावधानीपूर्वक पुनः जांच की जानी चाहिए जब वे ऐसे परिणाम उत्पन्न करते हैं।

इनमें से एक धारणा सुसमाचार के सिद्धांत का दस्तावेजीकरण करना है। गुंड्री के अनुसार दूसरी धारणा मैथ्यू की मार्क और क्यू पर पूरी निर्भरता है। इसलिए, वह मानता है कि मैथ्यू के पास मार्क और क्यू के अलावा कोई स्रोत नहीं है, और इसलिए उसे उस सामग्री से बुद्धिमान पुरुषों के दौरे को उत्पन्न करना होगा जो उसे लगता है कि ल्यूक ने चरवाहों और मंदिर की यात्रा आदि के बारे में क्यू से संरक्षित किया है। दूसरी समस्या वह है जिसे मैं स्पष्टीकरण भ्रांति कहता हूँ, और इसमें, हमारे पास यह धारणा है कि किसी भी स्पष्टीकरण को अज्ञानता पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

यह उदारवादी पक्ष पर संपादन आलोचना और कभी-कभी रूढ़िवादी पक्ष पर सामंजस्य के लिए एक समस्या है। कभी-कभी हमें इसका उत्तर नहीं पता होता है, इसलिए हम कह सकते हैं, ठीक है, यहाँ, आप जानते हैं, समस्या वाले अंश हैं और हमें लगता है कि इन्हें इस तरह से या शायद इस तरह से या इस तरह से सामंजस्य किया जा सकता है, लेकिन हमारे पास समय मशीनें नहीं हैं। हमें पक्का पता नहीं है।

आप कह सकते हैं, मैं इसका समर्थन करता हूँ, लेकिन मैं वहाँ नहीं था, ठीक है? ठीक है, आप उसी तरह की घटना को संपादन आलोचना के साथ देख रहे हैं, हालाँकि वे हमेशा आपको यह नहीं बताते हैं कि वहाँ अन्य विकल्प भी हैं। लुईस ने कहानियों पर पुस्तक में आलोचना पर अपने निबंध में यह टिप्पणी की है, पृष्ठ 132-133। उनका कहना है कि लगभग सभी आलोचक यह कल्पना करने के लिए प्रवृत्त होते हैं कि वे किसी पुस्तक से संबंधित कई तथ्यों के बहुत से पहलुओं को जानते हैं, जो वास्तव में वे नहीं जानते हैं।

लेखक, लुईस, एक लेखक थे, ठीक है, और उनकी पुस्तकों की समीक्षा की गई थी, अनिवार्य रूप से उनकी अज्ञानता को समझते हैं क्योंकि वह, अक्सर अकेले, वास्तविक तथ्यों को जानते हैं। हाल ही में, टोल्किन के लॉर्ड ऑफ द रिंग्स की समीक्षाओं में इसका एक बहुत अच्छा उदाहरण देखने को मिला है। अधिकांश आलोचकों ने माना कि यह एक राजनीतिक रूपक होना चाहिए, और कई लोगों ने सोचा कि मास्टर रिंग परमाणु बम होना चाहिए।

जो कोई भी रचना का वास्तविक इतिहास जानता था, वह जानता था कि यह न केवल गलत था, बल्कि कालानुक्रमिक रूप से असंभव भी था। यानी टोल्किन पहले ही रिंग में आ चुके थे, इससे पहले कि कोई भी नागरिक परमाणु बम के बारे में जानता, है न? दूसरों ने मान लिया कि उनके रोमांस की पौराणिक कथा उनकी बच्चों की कहानी, द हॉबिट से विकसित हुई थी। अब, ज़ाहिर है, कोई भी आलोचकों को इन बातों को न जानने के लिए दोषी नहीं ठहराता।

उन्हें कैसे पता होना चाहिए? समस्या यह है कि उन्हें पता ही नहीं है कि उन्हें नहीं पता। उनके दिमाग में एक अनुमान आता है और वे इसे बिना यह जाने लिख देते हैं कि यह एक अनुमान है। यहाँ, निश्चित रूप से, आलोचकों के रूप में हम सभी के लिए चेतावनी बहुत स्पष्ट और भयावह है।

पियर्स प्लोमैन और फेयरी क्वीन के आलोचक इन रचनाओं के इतिहास के बारे में बहुत बड़ी-बड़ी रचनाएँ करते हैं। बेशक, हम सभी को यह स्वीकार करना चाहिए कि ऐसी रचनाएँ अनुमान पर आधारित हैं, और अनुमान के तौर पर, आप पूछ सकते हैं, क्या उनमें से कुछ संभावित नहीं हैं? शायद वे संभावित हैं, लेकिन समीक्षा किए जाने के अनुभव ने उनकी संभावना के बारे में मेरे अनुमान को कम कर दिया है क्योंकि जब आप तथ्यों को जानना शुरू करते हैं, तो आप पाते हैं कि रचनाएँ अक्सर पूरी तरह से गलत होती हैं। जाहिर है, उनके सही होने की संभावना कम है, भले ही वे बहुत समझदारी से बनाई गई हों।

इसलिए, मैं इस विश्वास का विरोध नहीं कर सकता कि मृतकों के बारे में इसी तरह के अनुमान केवल इसलिए विश्वसनीय लगते हैं क्योंकि मृतक उनका खंडन करने के लिए मौजूद नहीं हैं। फेयरी क्वीन और पियर्स प्लोमैन के लेखकों के रूप में असली स्पेंसर या असली लैंगलैंड के साथ पाँच मिनट की बातचीत, पूरे श्रमसाध्य ताने-बाने को तहस-नहस कर सकती है। यह पृष्ठ 132, 133 है।

गलत उत्तर जानने से बेहतर है कि उत्तर न पता हो, और नहीं, हम नहीं जानते। तीसरी समस्या वह है जिसे मैं शोध प्रबंध भ्रांति कहता हूँ। पीएचडी उद्योग इस समस्या को बढ़ावा देता है।

पीएचडी उम्मीदवारों को किसी नई और अकादमिक चीज़ पर अपना शोध प्रबंध लिखने की ज़रूरत के कारण किसी जटिल स्पष्टीकरण के लिए सीधे स्पष्टीकरण को अस्वीकार करना, पुनर्निर्मित इतिहास के लिए दर्ज इतिहास को अस्वीकार करना, अप्रत्यक्ष साक्ष्य के लिए प्रत्यक्ष साक्ष्य को अस्वीकार करना हो सकता है। इसका परिणाम एक नए प्रकार का रूपक है। आपको पेरिन की टिप्पणी याद होगी, यहाँ पृष्ठ 42 पर पेरिन की टिप्पणी है।

प्रश्न, उत्तर और शिक्षाएँ यीशु और पतरस के होठों पर हैं, लेकिन इसमें शामिल शीर्षक प्रारंभिक चर्च की क्राइस्टोलॉजिकल शब्दावली से हैं। हालाँकि, पेरिकोप में पात्रों के नाम और पदनाम मंत्रालय, यीशु, पतरस और भीड़ की परिस्थितियों से प्राप्त हुए हैं, लेकिन वे प्रारंभिक चर्च की परिस्थितियों का भी समान रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं। यीशु चर्च को संबोधित करने वाले प्रभु हैं, पतरस उन गलत विश्वासियों का प्रतिनिधित्व करता है जो सही तरीके से स्वीकार करते हैं, फिर भी अपने स्वीकारोक्ति की गलत व्याख्या करते हैं, और भीड़ एक संपूर्ण चर्च सदस्यता है जिसके लिए निम्नलिखित सामान्य शिक्षा तैयार की गई है।

तो, हम इस कथा के संपादन आलोचनात्मक दृष्टिकोण के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण बिंदु पर आते हैं। इसमें ऐतिहासिक यीशु और उनके शिष्यों के बारे में एक कहानी का रूप है, लेकिन पुनर्जीवित प्रभु और चर्च के संदर्भ में एक उद्देश्य है। 42.

लुईस की प्रतिक्रिया पर ध्यान दें, जिन्होंने कहानियों पर अपनी पुस्तक में आलोचना पर वही लेख लिखा था। मुझे लगता है कि आलोचक अक्सर जहाँ गलती करते हैं, वह है रूपक अर्थ की जल्दबाजी में धारणा, और जैसे समीक्षक समकालीन कार्यों के बारे में यह गलती करते हैं, वैसे ही मेरे विचार से विद्वान अक्सर पुरानी रचनाओं के बारे में भी यही गलती करते हैं। मैं दोनों को

सलाह दूंगा, और मैं अपने आलोचनात्मक अभ्यास में इन सिद्धांतों का पालन करने की कोशिश करूंगा।

सबसे पहले, कोई भी कहानी मनुष्य की बुद्धि से नहीं बनाई जा सकती, जिसे किसी दूसरे व्यक्ति की बुद्धि द्वारा रूपक के रूप में व्याख्यायित नहीं किया जा सकता। आदिम पौराणिक कथाओं की आदिम व्याख्याओं की स्टोइक व्याख्या, पुराने नियम की ईसाई व्याख्याएँ और शास्त्रीय ग्रंथों की मध्ययुगीन व्याख्याएँ सभी इसे साबित करती हैं। इसलिए, केवल यह तथ्य कि आप अपने सामने मौजूद रचना का रूपक बना सकते हैं, अपने आप में इस बात का सबूत नहीं है कि यह एक रूपक है।

हमें किसी भी रचना को तब तक रूपक के रूप में प्रस्तुत नहीं करना चाहिए जब तक कि हम उसे रूपक के रूप में मानने के कारणों को स्पष्ट रूप से न बता दें। यह पृष्ठ 140, 141 है। चौथी समस्या जो मुझे दिखाई देती है, वह है जिसे मैं मौन भ्रांति से तर्क कहता हूँ।

यदि कोई विशेष घटना या विवरण केवल एक सुसमाचार में दिखाई देता है, तो लेखक ने अतिरिक्त जानकारी के बजाय इसे गढ़ा होगा। इसकी तुलना पेज 131 में लुईस की टिप्पणी से करें। नकारात्मक कथन निश्चित रूप से आलसी या परेशान समीक्षक के लिए विशेष रूप से खतरनाक होते हैं, और यहाँ हम सभी आलोचकों के लिए एक सबक है।

पूरी फेयरी क्वीन में से एक अंश आपको यह कहने में उचित ठहराएगा कि स्पेंसर कभी-कभी ऐसा-ऐसा करता है। केवल एक विस्तृत अध्ययन और एक अचूक स्मृति ही इस कथन को उचित ठहराएगी कि वह ऐसा कभी नहीं करता। यह हर कोई देखता है।

जो बात सबसे आसानी से बच जाती है, वह है उन कथनों में छिपी नकारात्मकता जो स्पष्ट रूप से सकारात्मक हैं। उदाहरण के लिए, किसी भी कथन में जिसमें विधेय नया शामिल है, कोई व्यक्ति हल्के से कहता है कि डन या स्टर्न या हॉपकिंस ने जो कुछ किया वह नया था, इस प्रकार वह खुद को नकारात्मकता के लिए प्रतिबद्ध करता है कि किसी ने पहले ऐसा नहीं किया था। लेकिन यह किसी के ज्ञान से परे है।

अगर इसे गंभीरता से लिया जाए तो यह किसी के भी ज्ञान से परे है। फिर से, हम सभी एक कवि के विकास या विकास के बारे में जो कुछ भी कहते हैं, उसका अक्सर नकारात्मक अर्थ यह हो सकता है कि उसने केवल वही लिखा जो हमारे पास आया है, जिसे कोई नहीं जानता। अगर हम कविता ए से कविता बी तक उनके तरीके में अचानक बदलाव देखते हैं, तो यह बिल्कुल भी अचानक नहीं होगा।

इसलिए, यह तथ्य कि किसी दिए गए सुसमाचार में, क्षमा करें, दिए गए सुसमाचार के लेखक ने कुछ विवरण का उल्लेख नहीं किया है, इसका कोई गारंटी नहीं है कि वह इसे नहीं जानता है। पाँचवीं समस्या वह है जिसे मैं मनोविश्लेषणात्मक भ्रांति कहता हूँ। आलोचक लेखक के लेखन से उसकी प्रेरणा का अनुमान लगा सकता है।

सुसमाचारों के बीच मतभेद आकस्मिक या ज़ोर देने के मामलों के बजाय पक्षपातपूर्ण हैं। यहाँ, लुईस ने पृष्ठ 134 पर एक अच्छी टिप्पणी की है। एक अन्य प्रकार का आलोचक जो आपकी पुस्तक की उत्पत्ति के बारे में अटकलें लगाता है, वह शौकिया मनोवैज्ञानिक है।

उनके पास साहित्य का फ़ायडियन सिद्धांत है और वे आपके अवरोधों के बारे में सब कुछ जानने का दावा करते हैं। वे जानते हैं कि आप किन अस्वीकृत इच्छाओं को संतुष्ट कर रहे हैं। और यहाँ, निश्चित रूप से, कोई भी पहले की तरह, सभी तथ्यों को जानने का दावा नहीं कर सकता है।

परिभाषा के अनुसार, आप, लेखक, उन चीज़ों के बारे में अचेतन हैं जिन्हें वह खोजने का दावा करता है। इसलिए, जितना ज़ोर से आप उन्हें अस्वीकार करेंगे, वे उतने ही सही होंगे। हालाँकि, अजीब बात यह है कि अगर आपने उन्हें स्वीकार किया, तो यह उसे भी सही साबित करेगा।

और एक और कठिनाई है। यहाँ कोई भी पक्षपात से इतना मुक्त नहीं है, क्योंकि यह प्रक्रिया लगभग पूरी तरह से शत्रुतापूर्ण समीक्षकों तक ही सीमित है। और अब जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो मैंने शायद ही कभी इसे किसी मृत लेखक पर लागू होते देखा है, सिवाय किसी विद्वान के जो किसी हद तक उसे बदनाम करने का इरादा रखता हो।

पैरालैंड्रा की उत्पत्ति के बारे में बात कर रहे हैं, ओवेन की कहानियों में, पृष्ठ 144। लुईस अपने समय के कुछ अन्य लेखकों से बात कर रहे हैं।

मुझे लगता है कि ब्रायन एल्लिस ही वह व्यक्ति है जो यहाँ दिखाई देता है। लुईस कहते हैं कि दूसरे उपन्यास, पैरालैंड्रा, जो उनकी विज्ञान कथा त्रयी में है, का प्रारंभिक बिंदु तैरते द्वीपों की मेरी मानसिक तस्वीर थी। मेरे बाकी सभी काम, एक तरह से, एक ऐसी दुनिया बनाने में शामिल थे जिसमें तैरते द्वीप मौजूद हो सकें।

और फिर, बेशक, एक टलती हुई गिरावट की कहानी विकसित हुई। ऐसा इसलिए है क्योंकि, आप जानते हैं, अपने लोगों को इस रोमांचक देश में लाने के लिए, कुछ तो होना ही चाहिए। एल्लिस कहते हैं, लेकिन मुझे आश्चर्य है कि आपने इसे इस तरह से पेश किया।

मुझे लगता है कि आपने पैरालैंड्रा का निर्माण शिक्षाप्रद उद्देश्य से किया है। लुईस, हाँ, हर कोई ऐसा ही सोचता है। वे बिलकुल गलत हैं।

बौद्धिक अहंकार का भ्रम। हम सभी उन लोगों से ईर्ष्या करते हैं जिनकी प्रतिष्ठा हमसे ज़्यादा है। यहाँ, आमतौर पर, विश्वविद्यालय के उदारवादी, और कुछ प्रकार के कम रूढ़िवादी लोगों को नीची नज़र से देखते हैं।

खैर, ये मेरी छह भ्रांतियाँ हैं, अगर आप चाहें तो, संपादन आलोचना की कार्यप्रणाली से जुड़ी समस्याएँ। संपादन आलोचना पर निष्कर्ष। ऊपर दी गई टिप्पणियों को बौद्धिकता-विरोधी तर्क के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए।

बल्कि, यह हमारी अपनी क्षमताओं का गंभीरता से मूल्यांकन करने और ईश्वर के प्रति भय रखने का आह्वान है, जो 1 कुरिन्थियों 3:19 के अनुसार, बुद्धिमानों को उनकी चालाकी में फंसा देता है। और जिसके विरुद्ध, नीतिवचन 21:30 के अनुसार, न तो बुद्धि है, न समझ है, न ही सलाह है। खैर, यह हमारी संपादन आलोचना की चर्चा है।

अब हम इस पूरे पाठ्यक्रम के बारे में सुसमाचार के इतिहास के बारे में कुछ निष्कर्ष निकालना चाहते हैं। हमने सुसमाचार की ऐतिहासिक सटीकता के मामले से संबंधित कई विषयों पर विचार किया है, विशेष रूप से समकालिक सुसमाचारों पर। हमने यीशु के बारे में आधुनिक विचारों पर विचार किया है, और हमने देखा है कि लोगों के पास यीशु के बारे में सभी प्रकार के विचार हैं।

यहोवा के साक्षी कहते हैं कि यीशु ईश्वर नहीं हैं। मॉर्मन कहते हैं कि यीशु ईश्वर थे, लेकिन आप भी हो सकते हैं। पुराने उदारवादी कहते हैं कि यीशु ईश्वरीय थे, जैसे सभी मनुष्य होते हैं, जैसे हैरी एमर्सन फ़ोसडिक की माँ थीं, आदि।

इन सभी विचारों का बाइबल से केवल स्पर्शीय संबंध है। ये सभी मूर्तिपूजा के नए रूप हैं, जो आरामदायक हो सकते हैं लेकिन किसी मुश्किल में आपकी मदद करने के लिए अच्छे नहीं हैं क्योंकि इन विचारों का समर्थन करने के लिए बनाए गए देवता वास्तव में मौजूद नहीं हैं। हमने विभिन्न ऐतिहासिक विचारों को भी देखा, जिनमें से जीसस सेमिनार वर्तमान सनक है।

वे ऐतिहासिक डेटा का उपयोग करने का दावा करते हैं, लेकिन वास्तव में, वे उसमें से अपनी पसंद के बिंदु चुनते हैं। यह हमें यीशु के बारे में ऐतिहासिक डेटा तक ले जाता है। आपके पढ़ने में, मैंने अपने छात्रों को ग्रेगरी बॉयड, सिनिक सेज, या सन ऑफ गॉड, या ली स्ट्रोबेल, द केस फॉर क्राइस्ट पढ़ने के लिए कहा था।

आपने देखा होगा कि शुरुआती मूर्तिपूजक स्रोत हमें यीशु के बारे में बहुत कम बताते हैं। हम देखते हैं कि वे कुछ ऐसी चीज़ों को ऐतिहासिक मानते हैं जिन्हें उदारवादी स्वीकार नहीं करना चाहेंगे। मसीहाई दावे, चमत्कार करना, और ऐसी ही अन्य बातें।

यहूदी सामग्री मसीह के खिलाफ़ नकारात्मक प्रतिक्रिया को दर्शाती है, जैसा कि नया नियम कहता है। नया नियम कहता है कि यीशु के यहूदी विरोधियों ने प्रतिक्रिया व्यक्त की, जैसा कि पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई थी। वे उसके अस्तित्व और गहन प्रभाव को नकारने में सक्षम नहीं थे, और अभी भी यीशु में पुराने नियम की भविष्यवाणी की पूर्ति की व्याख्या नहीं कर सकते हैं।

यीशु और गैर-ईसाई स्रोतों के बारे में इतनी कम जानकारी क्यों है? हम निश्चित रूप से नहीं जानते। शायद यह आज मीडिया की स्थिति की तरह है। हम अक्सर देखते हैं कि मीडिया उन चीज़ों की रिपोर्ट करने से बचता है जो उन्हें पसंद नहीं हैं, खासकर जब उन्हें नकारात्मक रूप देना मुश्किल होता है।

यीशु के बारे में नए नियम की गवाही के संबंध में, पॉल 50 के दशक के मध्य में लिख रहे हैं, और इसे समझना बहुत कठिन है। उनकी गवाही एक सामान्य तस्वीर के भीतर मसीह के बारे में

बढ़िया विवरण प्रदान करती है जो सुसमाचार चित्रों के अनुरूप है। यह हमें 3 पर लाता है। सुसमाचार यीशु के मुख्य स्रोत हैं।

सुसमाचारों में यीशु के बारे में 100 से ज़्यादा पेज हैं। आकार, उम्र और उत्पत्ति के हिसाब से, वे उसके बारे में किसी भी तरह के ऐतिहासिक अध्ययन के लिए हमारे मुख्य स्रोत हैं। उनके लेखकों के बारे में बाहरी सबूत काफ़ी पुख्ता हैं, जो हर एक के शीर्षक पर पाए जाने वाले नामों से मेल खाते हैं, किसी अन्य सुझाव के लिए कोई सबूत नहीं है।

जॉन को छोड़कर, ये वे नाम नहीं हैं जिन्हें कोई चुनता अगर नामों का आविष्कार किया जा रहा होता। सुसमाचारों के लेखन की तिथियों और क्रम के लिए बाहरी साक्ष्य को उदारवादियों द्वारा दो-दस्तावेज सिद्धांत को बनाए रखने के लिए त्याग दिया जाना चाहिए। फिर भी, सिद्धांत वास्तव में हमारे द्वारा प्रस्तावित सुझाव की तुलना में आंतरिक साक्ष्य को समझाने का बेहतर काम नहीं करता है, जो प्रेरितिक शिक्षा में सुसमाचार की सामग्री को लंगर डालता है।

लगभग 2,000 वर्षों के अंतराल पर, हम सुसमाचार सामग्री में सभी कथित विरोधाभासों का उत्तर नहीं दे सकते हैं, लेकिन हम उनके लिए सुझाव दे सकते हैं जो ऐतिहासिक विश्वसनीयता के अनुरूप हैं। हमें ऐसे मामलों पर चिंता करने से हमें कहीं अधिक समस्याओं वाले विचारों को अपनाने की ओर नहीं ले जाना चाहिए, इस प्रकार उन लोगों की तरह बन जाना चाहिए जो मच्छर को छानकर ऊँट को निगल जाते हैं। ये मामले केवल अकादमिक नहीं हैं।

उन्होंने सभी उदार पादरियों, अधिकांश बड़े संप्रदायों, धर्मनिरपेक्ष मीडिया और उन लोगों में से कई को प्रभावित किया है, जिन तक आप मसीह के लिए पहुँचने की कोशिश करेंगे, खासकर वे जिन्होंने विश्वविद्यालय की शिक्षा प्राप्त की है। उन्होंने कई ईसाइयों को जो ऐसी सामग्री के संपर्क में आए हैं, यीशु के बारे में सुसमाचार के आंकड़ों पर संदेह करने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने कई लोगों को ईसाई धर्म को पूरी तरह से अस्वीकार करने के लिए प्रेरित किया है और अधिकांश धर्मों द्वारा ईसाई धर्म के विरोध में उनका उपयोग किया जाता है।

हमें सबूतों पर ज़ोर देना चाहिए और लोगों से ज़िम्मेदारी से जीने, उसके प्रकाश में ज़िम्मेदारी से जीने का आह्वान करना चाहिए।

खैर, यही इस कोर्स के लिए संक्षिप्त सुसमाचार है। आपके ध्यान के लिए धन्यवाद।